L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- 01
PAPER- 01
PSYCHOLOGY (Honours)
TOPIC- Types of Interview method.

Dr. Pramod Kumar Singh
Assistant Professor,
Guest Teacher
N.S.S. College, Rajnagar,
Madhubani (Bihar)
pramodkumarsby2018@gmail.com

मनोविज्ञान में साक्षात्कार विधि का उपयोग काफी दिनों से होता आ रहा है। आधुनिक युग में इस विधि का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इस विधि में साक्षात्कारकर्ता और सूचनादाता दोनों ही आमने-सामने बैठते हैं। तथा साक्षात्कारकर्ता सूचनादाता से अध्ययन-समस्या के संबंध में सूचना प्राप्त करने का कार्य करता है। कामरलेक (1972) के अनुसार साक्षात्कार वह साधन है। जिससे कि मौखिक अथवा लिखित सूचना प्राप्त की जाती है। इस विधि में साक्षात्कार करने वाला व्यक्ति सूचनादाता के सामने बैठकर सूचनादाता से समस्या के संबंध में सूचना लिखित अथवा मौखिक अथवा दोनों के प्रश्नों द्वारा प्राप्त करता है। मनोविज्ञान में इस विधि का उपयोग एक स्वतंत्र विधि के रूप में भी किया जाता है। और सहायक विधि के रूप में भी किया जाता है। अक्सर इस विधि का उपयोग सहायक या सहयोगी विधि के ही रूप में किया जाता है। इस विधि का उपयोग अनेक प्रकार के उद्देश्यों के लिए किया जाता है। कभी-कभी इस विधि का उपयोग किसी समस्या के संबंध में प्रारंभिक सूचना एकत्र करने के लिए किया जाता है। इस विधि का उपयोग मनोविज्ञान का प्रायः सभी क्षेत्रों से संबंधित मामलों में किया जाता है।

Scanned with CamScanner

अन्य शाखाओं की अपेक्षा औद्योगिक मनोविज्ञान, असामान्य मनोविज्ञान और समाज मनोविज्ञान में इस विधि की उपयोगिता अधिक है।

साक्षात्कार विधि के प्रकार (Types of interview method)

(i) प्रामाणिक साक्षात्कार विधि :- साक्षात्कार की इस विधि में अध्ययन करते समय अध्ययन समस्या के संबंध में विभिन्न प्रकार के प्रश्न पहले से ही तैयार कर लिए जाते हैं। अध्ययन कर्ताओं से पूर्व निश्चित क्रम के अनुसार ही प्रश्नों को उसी क्रम में पूछा जाता है। अध्ययनकर्ता को प्रश्नों के क्रम और प्रश्नों की संरचना आदि को नहीं बदलना होता है। प्रामाणिक साक्षात्कार विधि अप्रामाणिक साक्षात्कार विधि की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय है। क्योंकि यह विधि अपेक्षाकृत अधिक वस्तुनिष्ठ है। और इससे विश्वसनीय परिणाम प्राप्त होते हैं। इस विधि की सहायता से समय की बचत भी की जा सकती है।

(ii) अप्रामाणिक साक्षात्कार विधि :- अप्रामाणिक साक्षात्कार में अध्ययन करते समय अध्ययन समस्या के संबंध में प्रश्न पहले से तैयार नहीं किये जाते हैं। और न ही प्रश्नों की संरचना निश्चित होती है। अध्ययनकर्ता अध्ययन समस्या के सम्बन्ध में कोई भी प्रश्न पूछने के लिए स्वतंत्र होता है। अप्रामाणिक साक्षात्कार विधि अधिक विश्वसनीय नहीं होती है। फिर भी इस विधि द्वारा प्रयोज्य को समझने का अधिक अवसर रहता है। क्योंकि उसमें प्रश्न किसी भी प्रकार से पूछे जा सकते हैं।

(iii) यह देखा जाता है कि व्यक्ति अनुसंधान को अध्ययन के प्रारंभिक स्तर पर अप्रमापित साक्षात्कार विधि उपयोगी होती है। जबकि अनुसंधान के द्वितीय स्तर पर जब अध्ययनकर्ता को उत्तरदाता और प्रश्न पूछने की आवश्यकता होती है। तब प्रमापित साक्षात्कार विधि अधिक उपयोगी होती है।

(i) अध्ययनकर्ता के लिए साक्षात्कार के लिए व्यक्तियों को तैयार करने में कठिनाई होती है। क्योंकि या तो सूचना का अभाव होता है या जो सूचना अध्ययनकर्ता चाहता है उस विषय पर लोगों के पास स्वाभाविक जानकारी नहीं होता है।

(ii) जब समस्या का संबंध व्यक्तियों के संवेगात्मक पहलुओं से होता है तो लोग अपने व्यक्तिगत जीवन के संबंध में जानकारी देना नहीं चाहते हैं। अध्ययनकर्ता लोगों की पुरानी बातों से यह विधि काफी समय नष्ट कर सकता है। क्योंकि उसे साक्षात्कार प्रविधि को पुनः- पुनः करना होता है।

(iii) अप्रमापित साक्षात्कार के द्वारा जो प्राप्त सामग्री प्राप्त होती है, वह कई बार पक्षपातपूर्ण होती है। अर्थात् उस पर लोगों की रुचियों, भावनाओं, प्रेरणाओं, संवेगों और अभिवृत्तियों आदि का प्रभाव पड़ता है।

(iv) सूचना तथा समस्याओं के संबंध में जो जानकारी देती है, उसका पुष्टि करना कठिन होता है। उसका पुष्टि तब तक नहीं कर भी सकते हैं। जब तक कि प्रतिदर्श न चुना गया हो और प्रतिदर्श का वैज्ञानिक आधार न हो।

(v) साक्षात्कार के द्वारा सही और विश्वसनीय सामग्री तब तक एकत्र नहीं कर भी सकते।

iv

जिन लोगों से साक्षात्कार कर्ता को इस विधि का प्रश्न-प्रश्न ज्ञात न हो —

(vi) साक्षात्कार की सफलता पूर्ण रूप से एक होता है तो सफलता के सम्बन्ध में उत्तरदाता प्रपत्र सामग्री पूर्ण नहीं कह भी सकती है।

(vii) पूर्वाग्रही साक्षात्कार कर्ता से भी साक्षात्कार के वास्तविकता से भटक भी हो सकता है। और ऐसी अवस्था में यह सही परिणाम नहीं देता है।

(viii) साक्षात्कार कर्ता को प्रयोज्य एक मौलिक रिपोर्ट पर आश्रित रहना पड़ता है। प्रयोज्य की अज्ञानता के कारण परिणाम त्रुटिपूर्ण हो सकते हैं।

— साक्षात्कार विधि का महत्व —

(i) इस विधि द्वारा हम उन मानसिक भावनाओं का अध्ययन कर सकते हैं जिनको हम देख नहीं सकते हैं अर्थात जिनका निरीक्षण विधि द्वारा अध्ययन नहीं किया जा सकता है। उनका अध्ययन इस विधि द्वारा करते हैं।

(ii) इस विधि द्वारा भूत घटनाओं का अध्ययन सरलता से किया जा सकता है। क्योंकि एक मनोविज्ञान की घटनाएं ऐसी हैं। जिनका प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण सम्भव नहीं है।

Dr. Premnarayan Sahu,
Date - 04/08/2020
Sub - Psychology